Toppersnotes
Unleash the topper in you

बाल विकास, शिक्षण शास्त्र एवं शिक्षा मनोविज्ञान

सभी शिक्षण परीक्षाओं के लिए

भाग - 3

शिक्षा मनोविज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	शिक्षा मनोविज्ञान	1
2	शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन	26
3	शैक्षिक पर्यवेक्षण	40
4	नेतृत्व शैलियाँ	50
5	संप्रेषण कौशल	59
6	सूचना एवं तकनीकी	70
7	जीवन कौशल	112
8	क्रियात्मक अनुसंधान	132
9	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) – 2005	137
10	शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009	143
11	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	157
12	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक परीक्षा	169
13	आरंभिक पठन कौशल	184
14	सामाजिक निर्माण के रूप मे लिंग और इसकी भूमिका	192
15	सृजनात्मक	200
16	शिक्षा और मनोविज्ञान से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तके एवं लेखक	208
17	रुचि, चिंतन, कल्पना एवं तर्क	211

1 CHAPTER शिक्षा मनोविज्ञान

मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान की उत्पत्ति **दर्शनशास्त्र** से मानी गई है।
- इसका प्रारंभिक अध्ययन **अरस्तू** ने **'आत्मा के विज्ञान'** के रूप में किया।
- मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग करने का श्रेय **संरचनावादी मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स** को जाता है।
- मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना विलियम बुंट द्वारा 1879 में जर्मनी के लिपजींग शहर में की गई।
- **मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना हैं –**

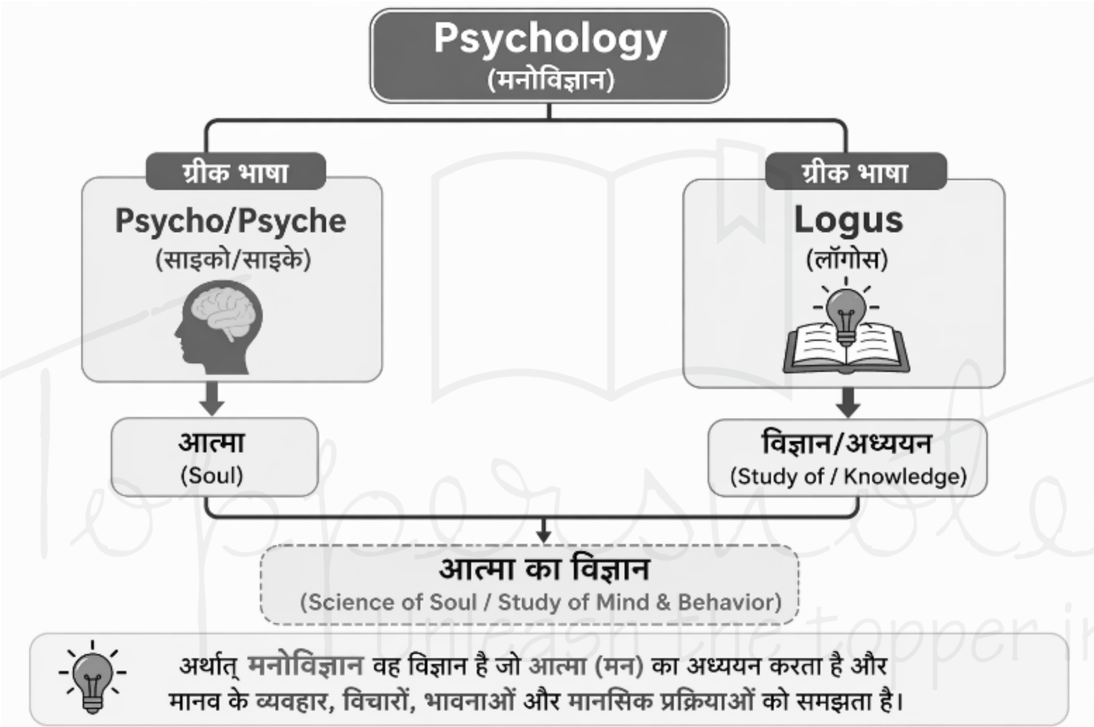

- वाटसन ने सर्वप्रथम मनोविज्ञान को व्यवहार का धनात्मक विज्ञान कहा था।
- मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं, अनुभवों तथा व्यक्त व अव्यक्त दोनों प्रकार के व्यवहारों का एक क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन है।

परिभाषा

वुडवर्थ के अनुसार, "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले व्यवहार का अध्ययन है।"

वाटसन के अनुसार, "मनोविज्ञान व्यवहार का धनात्मक / सकारात्मक विज्ञान है।"

जेम्स ड्रेवर के अनुसार, "मनोविज्ञान मानव एवं पशु दोनों के सभी प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन करता है।"

स्कीनर के अनुसार, "मनोविज्ञान व्यवहार का आधारभूत विज्ञान है।"

मेक्डूगल के अनुसार, "मनोविज्ञान आचरण एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।"

मनोविज्ञान की प्रकृति / विशेषताएँ

- **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है -** क्योंकि मनोविज्ञान में मानव एवं पशु के सभी प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है।
- **मनोविज्ञान धनात्मक विज्ञान है -** क्योंकि मनोविज्ञान में व्यवहार का अध्ययन करने के लिए विभिन्न विधियों व प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है तथा परिणाम ज्ञात किये जाते हैं।
- **मनोविज्ञान मनोसामजिक विज्ञान है -** क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा मनोविज्ञान में इस प्रकार के सामाजिक प्राणी के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
- **मनोविज्ञान जीव विज्ञान है -** क्योंकि मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति के विकास का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है, इसलिए मनोविज्ञान को जीव विज्ञान माना जाता है।
- **मनोविज्ञान कला है -** क्योंकि मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में निपूर्णता एवं सौन्दर्यता आती है।
- **मनोविज्ञान विकास का विज्ञान है -** क्योंकि अनुसंधानों के माध्यम से मनोविज्ञान के नवीन आयाम प्रकट होते जा रहे हैं इसलिए मनोविज्ञान का विकास का विज्ञान है।

मनोविज्ञान के लक्ष्य

- मनोविज्ञान मानव एवं पशु के व्यवहार एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।

- मनोविज्ञान का मुख्य लक्ष्य मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को मापने के लिए परीक्षण या विशेष प्रविधि का विकास करना है।
- परीक्षण या प्रविधि में ये दो गुण आवश्यक है।

1. **विश्वसनीयता :** बार-बार मापने पर भी प्राप्तांक में कोई परिवर्तन नहीं विश्वसनीयता कहलाता है।
2. **वैद्यता:** परीक्षण वहीं माप रहा है जिसे मापने के लिए उसे बनाया गया है।

- मानव व्यवहार की व्याख्या करना मनोविज्ञान का सबसे अव्वल लक्ष्य है क्योंकि जब तक मनोविज्ञान यह नहीं बतला पाता है कि व्यक्ति ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है, तो वे सही ढ़ंग से न तो उस व्यवहार के बारें में पूर्वकथन कर सकते हैं और न ही ठीक ढ़ंग से नियंत्रण कर पाते है।

मनोविज्ञान का इतिहास

- मनोविज्ञान का प्रारम्भ या उद्भव मानव को समझने के उद्देश्य से हुआ। इसमें प्राणी जगत के मन, आत्मा, चेतना तथा उनके व्यवहार एवं क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। प्रारम्भ में इसके अध्ययन में मानव एवं पशु दोनों के व्यवहार को शामिल किया गया था, परंतु वर्तमान में इसका क्षेत्र मुख्यतः मानव व्यवहार तक सीमित है।

नोट: 16वीं शताब्दी में मनोविज्ञान का अध्ययन दर्शनशास्त्र के एक भाग के रूप में किया जाता था।

1. प्राचीन एवं ऐतिहासिक विकास

- ✓ "मनोविज्ञान" शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1590 ई. में **रूडोल्फ गोकलेनियस** ने किया।
- ✓ मनोविज्ञान की प्रारम्भिक जड़ें ग्रीक दार्शनिकों **प्लेटो, अरस्तु और सुकरात** से जुड़ी मानी जाती हैं।
- ✓ **प्लेटो (427–347 ई.पू.)** ने आत्मा के स्वरूप और उसके महत्व पर विचार प्रस्तुत किए।
- ✓ **हिप्पोक्रेट्स (400 ई.पू.)** ने शरीर गठन का सिद्धांत दिया, जिससे प्रभावित होकर **शेल्डन** ने सोमैटोटाइप व्यक्तित्व वर्गीकरण सिद्धांत प्रस्तुत किया।
- ✓ ग्रीक दार्शनिक **ऑगस्टीन और थॉमस एक्विनास** ने मन और शरीर को अलग-अलग लेकिन संबंधित माना।
- ✓ **डेसकार्टेस और स्पिनोज़ा** ने मन और शरीर के संबंध पर विचार प्रस्तुत किए।
- ✓ डेसकार्टेस का मत था कि व्यक्ति में कुछ विचार जन्मजात होते हैं।
- ✓ **जॉन लॉक** के अनुसार मन जन्म के समय "टैबुला रासा" (कोरा कागज) होता है, जिस पर अनुभवों के माध्यम से ज्ञान लिखा जाता है।

2. आधुनिक मनोविज्ञान का विकास

- ✓ मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक अध्ययन का प्रारम्भ **विल्हेल्म वुंट (Wilhelm Wundt)** से माना जाता है।
- ✓ वुंट ने 1879 ई. में जर्मनी के लिपजिग में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की, इसलिए उन्हें **प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक** कहा जाता है।
- ✓ **रूसो** के अनुसार मनुष्य जन्म से अच्छा होता है, परंतु समाज के अनुभव उसे प्रभावित करते हैं।
- ✓ **स्पेन्सर** के अनुसार मनुष्य में स्वार्थता एवं आक्रामकता जैसे गुण जन्मजात होते हैं, जिन्हें समाज नियंत्रित करता है।
- ✓ **जेम्स मिल और जॉन स्टुअर्ट मिल** ने साहचर्यवाद को विकसित किया।

प्रमुख योगदानकर्ता

- ✓ **विलियम जेम्स, फ्रायड, वॉटसन, स्किनर, वुडवर्थ** आदि ने मनोविज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- ✓ **विलियम जेम्स** को आधुनिक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।

3. भारत में मनोविज्ञान का विकास

- ✓ भारत में पश्चिमी मनोविज्ञान के अध्ययन हेतु 1916 में डॉ. एन. एन. सेन ने **कलकत्ता विश्वविद्यालय** में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की।
- ✓ 1924 में डॉ. एम. वी. गोपालस्वामी ने **मैसूर विश्वविद्यालय** में दूसरी प्रयोगशाला स्थापित की।
- ✓ **एलेक्सेंडर कैनन** ने भारतीय दर्शन को मनोविज्ञान के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना और कहा कि भारतीय चिंतन मानसिक प्रक्रियाओं को समझने में अत्यंत समृद्ध है।

मनोविज्ञान की अवस्थाएँ

➢ मनोविज्ञान के स्वरूप में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं। इसके विकास को मुख्यतः चार अवस्थाओं में विभाजित किया गया है –

1. आत्मा का विज्ञान

- ✓ सर्वप्रथम 16वीं शताब्दी में **प्लेटो, अरस्तु, सुकरात और डेसकार्टेस** आदि दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को "आत्मा का विज्ञान" माना।
- ✓ उनके अनुसार, सभी व्यवहार एवं क्रियाओं का नियंत्रण आत्मा द्वारा होता है।
- ✓ इस विचारधारा में आत्मा के स्वरूप, रंग, रूप एवं अस्तित्व पर प्रश्न उठे, परंतु कोई वैज्ञानिक प्रमाण न मिलने के कारण इसे अस्वीकार कर दिया गया।
- ✓ डेसकार्टेस ने माना कि आत्मा केवल मनुष्यों में पाई जाती है।

नोट: फ्रांस के दार्शनिक **रेने डेसकार्टेस** ने इस मत पर प्रश्न उठाते हुए इसे वैज्ञानिक रूप से अस्वीकार किया।

2. मन या मस्तिष्क का विज्ञान

- ✓ 17वीं शताब्दी में इटली के **पोम्पोनाज़ी**, तथा विद्वानों जैसे **थॉमस रीड और टीचेनर** ने मनोविज्ञान को मन/मस्तिष्क का विज्ञान माना।
- ✓ इस दृष्टिकोण के अनुसार, सभी व्यवहार का नियंत्रण मन या मस्तिष्क द्वारा होता है।
- ✓ **बी. एन. झा** के अनुसार, मस्तिष्क के स्वरूप की अस्पष्टता के कारण यह परिभाषा वैज्ञानिक रूप से प्रगति नहीं कर सकी।
- ✓ मन का स्वरूप स्पष्ट न होने के कारण यह विचार भी अस्वीकार कर दिया गया।

3. चेतना का विज्ञान

- ✓ 19वीं शताब्दी में **विल्हेम वुंट, विलियम जेम्स और जेम्स सली** आदि ने मनोविज्ञान को "चेतना का विज्ञान" कहा।
- ✓ इस दृष्टिकोण के अनुसार, चेतन अवस्था ही व्यवहार को नियंत्रित करती है।
- ✓ 1879 ई. में वुंट ने जर्मनी के लिपजिग में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की, जिससे मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान बन गया।
- ✓ विलियम जेम्स ने अपनी पुस्तक *Principles of Psychology (1890)* में चेतना पर विस्तार से चर्चा की।
- ✓ **सिग्मंड फ्रायड** ने बताया कि व्यवहार पर अचेतन मन का भी गहरा प्रभाव पड़ता है।
- ✓ यह मत इसलिए अस्वीकार किया गया क्योंकि चेतना का प्रत्यक्ष या वैज्ञानिक निरीक्षण संभव नहीं है।
- ✓ **विलियम मैकडूगल** ने चेतना शब्द की आलोचना करते हुए इसे अस्पष्ट बताया।

4. व्यवहार का विज्ञान

✓ 20वीं शताब्दी में मनोविज्ञान का आधुनिक स्वरूप विकसित हुआ।

✓ **वॉटसन, वुडवर्थ, स्किनर, थॉर्नडाइक और मैकडूगल** आदि ने मनोविज्ञान को “व्यवहार का विज्ञान” माना।

✓ **वॉटसन के अनुसार,** “मनोविज्ञान व्यवहार का निश्चित विज्ञान है।”

✓ इस दृष्टिकोण में मानव एवं पशु दोनों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

✓ वर्तमान में यही दृष्टिकोण सर्वमान्य है।

मनोविज्ञान और व्यवहारवाद

➢ वर्तमान समय में, मनोविज्ञान को "व्यवहार का विज्ञान" कहा जाता है, क्योंकि यह अध्ययन करता है कि मनुष्य और अन्य जीव अपने पर्यावरण में कैसे प्रतिक्रिया करते हैं और कैसे विभिन्न बाहरी कारक उनके व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

➢ मनोविज्ञान में विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का अवलोकन और विश्लेषण किया जाता है, ताकि यह समझा जा सके कि लोग और जीव अपने मानसिक और शारीरिक प्रक्रियाओं के आधार पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।

➢ **शिक्षक और व्यवहारवादी सिद्धांत**

✓ शिक्षक का यह दृष्टिकोण **व्यवहारवाद** (Behaviorism) सिद्धांत से संबंधित है, जिसमें सीखने के लिए बाहरी उत्तेजनाओं और प्रतिक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।

- ✓ इस दृष्टिकोण में, शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहन और सुधार के माध्यम से कौशल सिखाते हैं, जिससे व्यवहार को सुदृढ़ किया जाता है।
- ✓ यह सिद्धांत **B.F. स्किनर** और **जॉन वॉटसन** द्वारा प्रस्तावित किया गया था।

➢ **व्यवहारात्मक उद्देश्य की विशेषताएँ**

- ✓ व्यवहारात्मक उद्देश्य की विशेषता यह है कि इसे **अवलोकनीय और परिमेय** रूप में व्यक्त किया जाता है। इसका मतलब है कि उद्देश्य को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है और मापा जा सकता है, जैसे कि छात्रों द्वारा किसी विशेष कौशल या ज्ञान का प्रदर्शन।
- ✓ यह दृष्टिकोण शिक्षा में विशिष्ट और मापने योग्य लक्ष्यों को निर्धारित करने की अनुमति देता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्र ने उद्देश्य को प्राप्त किया है या नहीं।

➢ **जे. बी. वॉटसन और व्यवहारवाद: जे. बी. वॉटसन** को व्यवहारवाद के जनक के रूप में जाना जाता है। वॉटसन ने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि मानसिक प्रक्रियाओं के बजाय केवल अवलोकनीय और मापने योग्य व्यवहारों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उनके अनुसार, मानव और जानवरों के व्यवहार को बाहरी पर्यावरणीय उत्तेजनाओं और प्रतिक्रियाओं के आधार पर समझा जा सकता है।

➢ **रोजर्स द्वारा व्यवहार सुधार दृष्टिकोण: रोजर्स (2004)** द्वारा प्रस्तावित **व्यवहार सुधार दृष्टिकोण** व्यवहार संबंधी समस्याओं वाले छात्रों से निपटने के लिए एक "संपूर्ण विद्यालय" दृष्टिकोण है। इसका उद्देश्य विद्यालय के सभी हिस्सों (शिक्षक, प्रशासन, छात्र, और अभिभावक) को एक साथ लाकर व्यवहारिक सुधार की प्रक्रिया को लागू करना है, ताकि छात्रों के व्यवहार में सुधार हो सके और उनकी शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

➢ **टॉलमेन का अव्यक्त अधिगम सिद्धांत:** टॉलमेन ने **अव्यक्त अधिगम** का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें यह कहा गया कि अधिगम बिना किसी स्पष्ट व्यवहार परिवर्तन के होता है, और यह तब सामने आता है जब व्यक्ति को किसी बाहरी प्रोत्साहन या पुरस्कार मिलता है।

➢ **उद्देश्यपूर्ण अधिगम:** अधिगम सदैव उद्देश्यपूर्ण होता है। अधिगम से व्यवहार में परिवर्तन आता है, जो धनात्मक और प्रगतिशील होता है।

शिक्षा

➢ "शिक्षा" शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की "शिक्ष्" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है "सीखना" या "ज्ञान प्राप्त करना।"

➢ शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्रपात **जीन-जैक्स रूसो (Rousseau)** ने किया।

➢ रूसो ने अपनी पुस्तक **"Emile (एमाइल)"** में शिक्षा की प्राकृतिक और बाल-केंद्रित अवधारणा प्रस्तुत की।

➢ शिक्षा अंग्रेजी के शब्द Education का हिंदी रुपांतरण है जो लेटिन भाषा के Educatum शब्द से बना है जिसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

Unleash the topper in you

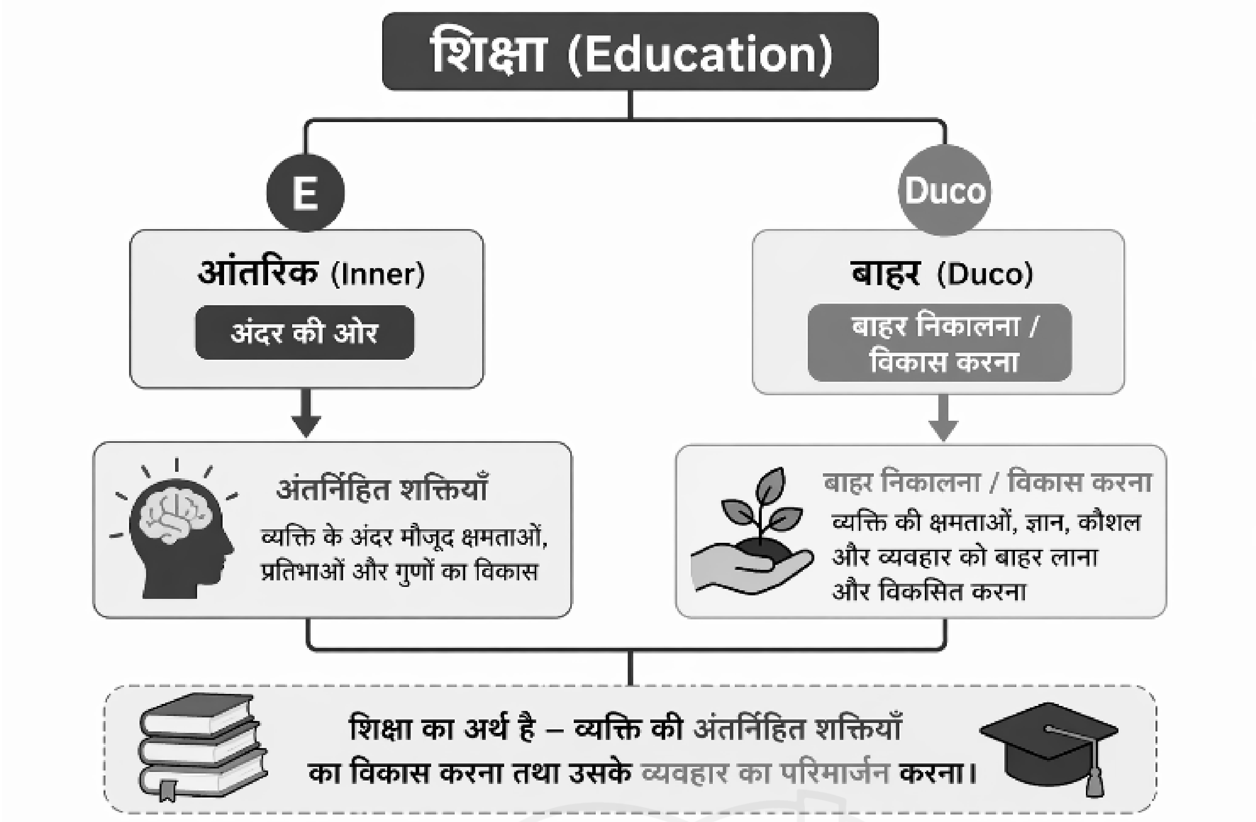

शिक्षा का वास्तविक अर्थ

- शिक्षा का वास्तविक अर्थ है - **गुरु द्वारा अज्ञान (अंधकार) से ज्ञान (प्रकाश) की ओर ले जाना।**
- इसका उद्देश्य व्यक्ति के अंधकार (अज्ञानता) को दूर कर उसे ज्ञान और समझ के प्रकाश की ओर अग्रसर करना है।

परिभाषा

- **अरस्तू के अनुसार**"स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण शिक्षा का कार्य है।"
- **फ्रोबेल के अनुसार** "शिक्षा व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को बाह्य शक्तियों का रूप देता है।"
- **गाँधीजी के अनुसार**"शिक्षा से मेरा अभिप्राय मनुष्य के शरीर, आत्मा व मस्तिष्क के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।"
- **स्वामी विवेकानंद के अनुसार** "शिक्षा बालक की पूर्व निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करती है।"
- **पेस्टोलॉजी के अनुसार** "शिक्षा बालक में आंतरिक शक्तियों का स्वभाविक, समरस व प्रगतिशील विकास करती है।"

शिक्षा के प्रकार

- शिक्षा मुख्यतः तीन प्रकार की होती है -

1. औपचारिक शिक्षा
- ✓ यह शिक्षा निर्धारित समय और स्थान पर प्राप्त की जाती है।
- ✓ उदाहरण: विद्यालय, कॉलेज।

2. अनौपचारिक शिक्षा
- ✓ इस शिक्षा में समय और स्थान निर्धारित नहीं होता।
- ✓ यह जीवन के अनुभवों के माध्यम से प्राप्त होती है।
- ✓ उदाहरण: परिवार, समाज।

3. निरौपचारिक शिक्षा
- ✓ यह संगठित परंतु लचीली शिक्षा प्रणाली होती है।
- ✓ यह दूरस्थ माध्यमों से प्राप्त की जाती है।
- ✓ उदाहरण: टीवी, समाचार पत्र, ओपन यूनिवर्सिटी।

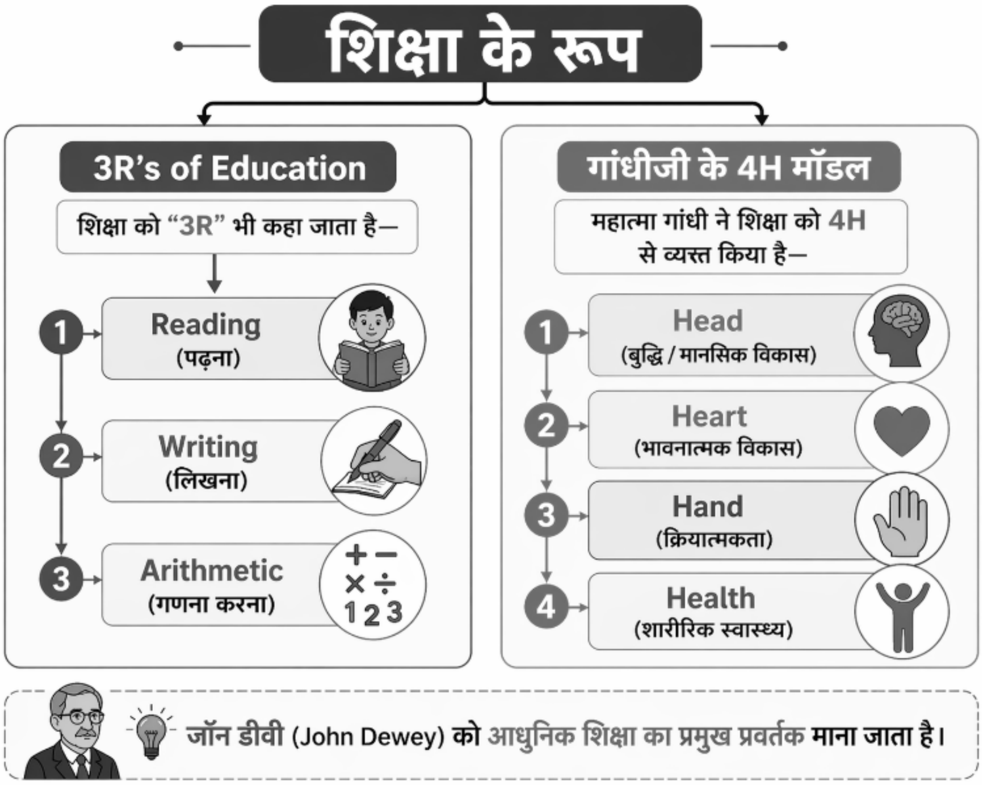
शिक्षा के रूप
3R's of Education
शिक्षा को "3R" भी कहा जाता है—
1 Reading (पढ़ना)
2 Writing (लिखना)
3 Arithmetic (गणना करना)
गांधीजी के 4H मॉडल
महात्मा गांधी ने शिक्षा को 4H से व्यक्त किया है—
1 Head (बुद्धि / मानसिक विकास)
2 Heart (भावनात्मक विकास)
3 Hand (क्रियात्मकता)
4 Health (शारीरिक स्वास्थ्य)
जॉन डीवी (John Dewey) को आधुनिक शिक्षा का प्रमुख प्रवर्तक माना जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान
(Educational Psychology)
शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों— शिक्षा और मनोविज्ञान —के मेल से बना है।
इसका शाब्दिक अर्थ है "शिक्षा से संबंधित मनोविज्ञान"।
शिक्षा
(Education)
ज्ञान, कौशल, मूल्य और व्यवहार में परिवर्तन की प्रक्रिया।
मनोविज्ञान
(Psychology)
मानव व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं और व्यवहार के अध्ययन का विज्ञान।
दोनों के मेल से बना विषय
शिक्षा + मनोविज्ञान
= शिक्षा मनोविज्ञान
शाब्दिक अर्थ
"शिक्षा से संबंधित मनोविज्ञान"
अर्थात् शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान।
सारांश
शिक्षा (शिक्षा देना) और मनोविज्ञान (मानव व्यवहार का अध्ययन)
— जब दोनों मिलते है, तब बनता है शिक्षा मनोविज्ञान।

- यह शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।
- शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत मनोविज्ञान के संप्रत्ययों, सिद्धांतों तथा विधियों का प्रयोग शैक्षिक परिस्थितियों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है।
- दूसरे शब्दों में, मनोविज्ञान के सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग करना ही शिक्षा मनोविज्ञान कहलाता है।
- यह शैक्षिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।

परिभाषा

- **कॉलसनिक के अनुसार** "मनोविज्ञान के सिद्धांतों एव परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान है।"
- **क्रो एंड क्रो के अनुसार** "शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धा अवस्था तक सभी प्रकार के सीखने के अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या करता है।"
- **स्कीनर के अनुसार-** "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो अधिगम एंव शिक्षण से संबंधित है।"
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार,** शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या करता है।
- **फ्रोबेल के अनुसार,** शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी जन्मजात शक्तियों का विकास करता है।
- **सारे एवं टेलफोर्ड के अनुसार,** शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य संबंध सीखने से है तथा यह शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।
- **रूसो के अनुसार,** बालक एक पुस्तक के समान है, जिसका अध्ययन प्रत्येक शिक्षक को करना चाहिए।
- **स्टीफन के अनुसार,** शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक प्रक्रियाओं का क्रमबद्ध अध्ययन है।
- **सी. एच. जड के अनुसार,** "जन्म से लेकर परिपक्वता तक विकास क्रम में प्राणी के व्यवहार में जो परिवर्तन आते हैं, उनकी व्याख्या एवं विवेचना करने वाला विज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान कहलाता है।"
- **मारिया मॉन्टेसरी के अनुसार,** "शिक्षक को जितना अधिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का ज्ञान होता है, उतना ही अधिक वह समझता है कि कैसे पढ़ाया जाए।"

शिक्षा और मनोविज्ञान का संबंध

- मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है, जबकि शिक्षा उस व्यवहार में परिवर्तन लाने का कार्य करती है।
- इसलिए शिक्षा और मनोविज्ञान के बीच गहरा और महत्वपूर्ण संबंध है।

शिक्षा मनोविज्ञान की विशेषताएँ

- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, सुगम और प्रभावी बनाता है।
- इसकी प्रकृति वैज्ञानिक है, क्योंकि इसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।
- इसमें मनोविज्ञान के सिद्धांतों और विधियों का प्रयोग होता है।
- इसका मुख्य केंद्र मानव व्यवहार है।
- यह अवलोकन एवं अनुसंधान द्वारा प्राप्त तथ्यों का संग्रह करता है।

ToppersNotes Unleash the topper in you

➢ संग्रहीत ज्ञान को यह सिद्धांतों के रूप में व्यवस्थित करता है।

➢ यह शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु उपयुक्त विधियों का विकास करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति

➢ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है।

➢ इसमें नियम एवं सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है, जो सामान्यतः सार्वभौमिक होते हैं।

➢ यह मानव व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

➢ यह एक सकारात्मक (Positive) विज्ञान है।

➢ यह विद्यार्थियों की उपलब्धियों के आधार पर भविष्यवाणी करने में सक्षम होता है।

➢ शिक्षा मनोविज्ञान एक विशुद्ध विज्ञान माना जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का विकास

➢ शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति लगभग **1900 ई.** मानी जाती है।

➢ इसका वास्तविक स्वरूप **1920 ई.** के आसपास विकसित हुआ।

➢ **कोलसेनिक** ने इसका आरंभ प्लेटो से माना है।

➢ **स्किनर** ने इसका आरंभ अरस्तु से माना है।

➢ शिक्षा मनोविज्ञान की औपचारिक आधारशिला **स्टेनली हॉल (Stanley Hall)** ने **1889 ई.** में रखी।

➢ **थॉर्नडाइक** को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक माना जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की शाखाएँ

1. सामान्य मनोविज्ञान
2. असामान्य मनोविज्ञान
3. मानव मनोविज्ञान
4. पशु मनोविज्ञान
5. व्यक्तिक मनोविज्ञान
6. समूह मनोविज्ञान
7. प्रौढ़ मनोविज्ञान
8. शिक्षा मनोविज्ञान
9. शुद्ध मनोविज्ञान
10. व्यावहारिक मनोविज्ञान
11. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
12. विकासात्मक मनोविज्ञान
13. पर्यावरणीय मनोविज्ञान
14. पैरा मनोविज्ञान
15. औद्योगिक मनोविज्ञान
16. नैदानिक मनोविज्ञान
17. समाज मनोविज्ञान
18. अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान
19. मनौभौतिकी मनोविज्ञान
20. आर्थिक मनोविज्ञान
21. स्वास्थ्य मनोविज्ञान
22. बाल मनोविज्ञान
23. दैहिक मनोविज्ञान
24. आपराधिक मनोविज्ञान
25. परामर्श मनोविज्ञान
26. संगठनात्मक मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र

➢ शिक्षा मनोविज्ञान में निम्नांकित बातों का अध्ययन किया जाता है।
   1. शिक्षा के समस्याओं का अध्ययन।
   2. पाठ्यक्रम-निर्माण से संबंधित अध्ययन।
   3. शिक्षण विधियों की उपयोगिता और अनुपयोगिता का अध्ययन।
   4. बालक के विकास की अवस्थाओं का अध्ययन।
   5. बालक के रूचियों और अरूचियों का अध्ययन।
   6. बालक की प्रेरणा और मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन।
   7. मानसिक रोगों से ग्रस्त, असाधारण, अपराधी बालकों का अध्ययन।
   8. बालक के वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन।
   9. बालक की विशेष योग्यताओं का अध्ययन, शिक्षा समस्या का अध्ययन।
   10. अनुशासन संबंधी समस्याओं का अध्ययन।
   11. बालक के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सामाजिक, सौन्दार्यात्मक, संवेगात्मक विकास का अध्ययन।
   12. बालक की व्यक्तिगत् विभिन्नता, सीखने की क्रियाओं का अध्ययन।

शिक्षा मनोविज्ञान के संप्रदाय

संरचनावाद – 1892

➢ **अन्य नाम:** अन्तः निरीक्षणवाद

➢ **प्रवर्तक:** विल्हेम वुंट, टिचनर

मुख्य बिंदु:

➢ संरचनावाद का आरंभ टिचनर (विलियम वुन्ट के शिष्य) ने अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में 1892 ई. में किया।

➢ वुंट ने 1879 में लिपजिग (जर्मनी) में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की।

- मनोविज्ञान की विषय-वस्तु **चेतना** है।
- चेतना के तीन तत्व हैं:
  1. संवेदना
  2. प्रतिमा या प्रतिबिंब
  3. भाव या अनुराग
- टिचनर ने अंतःनिरीक्षण विधि को मनोविज्ञान की प्रमुख विधि माना है।
- यह संप्रदाय समूह सरंचना के माध्यम से अध्ययन करने पर बल देता हैं ।
- वुण्ट ने संवेदना को रंग, स्वाद, स्वर के रूप में विभाजित किया है।
- वुण्ट ने भाव को तीन युग्मों: उत्तेजना - शांत, तनाव-शिथिलन, सुख - दुःख में बाँटा है। इसे **भाव का त्रिविमीय सिद्धांत** भी कहा जाता है।
- टिचनर के अनुसार मन और चेतना दोनों ही मनुष्य के अनुभव है जिनका आधार स्नायुमण्डल है।
- वुंट के अनुसार चेतना के गुण: **गुण और तीव्रता**
- टिचनर के अनुसार चेतना के गुण : **गुण, तीव्रता, स्पष्टता और अवधि**

प्रकार्यवाद / कार्यात्मकवाद

- प्रकार्यवाद का प्रारंभ **विलियम जेम्स** ने अमेरिका के **हार्वर्ड विश्वविद्यालय** में किया।
- उन्होंने अपनी पुस्तक **"Principles of Psychology (1890)"** में इसकी अवधारणा प्रस्तुत की।
- विलियम जेम्स ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना भी की।
- प्रकार्यवाद के वास्तविक संस्थापक माने जाते हैं: **जॉन ड्यूई, जेम्स एंजेल, हार्वे ।** इन्होंने 1894 ई. में शिकागो विश्वविद्यालय में प्रकार्यवाद को विकसित किया।
- **मुख्य विचार**
  - ✓ मनोविज्ञान का संबंध **मानसिक प्रक्रियाओं** से है, न कि केवल चेतना के तत्वों से।
  - ✓ यह अध्ययन करता है कि **मानव मस्तिष्क कैसे कार्य करता है**।
  - ✓ मनुष्य का व्यवहार **मन और शरीर की अंतःक्रिया** का परिणाम है।
  - ✓ इसका आधार **उपयोगिता** है।
  - ✓ यह शिक्षा में वस्तुनिष्ठता पर बल देता है।
  - ✓ संरचनावाद के विरोध में इसका विकास हुआ।
- **प्रमुख विशेषताएँ**
  - ✓ व्यवहार का अध्ययन मानसिक कार्यों के आधार पर किया जाता है।
  - ✓ सीखने की प्रक्रिया में वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण है।
  - ✓ बाल मनोविज्ञान, व्यक्तिगत भिन्नता और बुद्धि परीक्षण की नींव इसी संप्रदाय ने रखी।

प्रकार्यवाद के प्रमुख उप-संप्रदाय

क्रम	उप-संप्रदाय	प्रमुख विद्वान	विशेषताएँ
1	**शिकागो संप्रदाय**	जॉन ड्यूई, जेम्स एंजेल, हार्वे	➢ व्यवहार को संपूर्णता में देखना ➢ चेतना के तत्वों की बजाय कार्य पर बल
2	**कोलंबिया संप्रदाय**	थॉर्नडाइक, कैटेल, रॉबर्ट वुडवर्थ	➢ सीखने में पर्यावरण की भूमिका पर बल ➢ व्यवहार को वैज्ञानिक रूप से समझने का प्रयास
3	**यूरोपीय संप्रदाय**	एडगर रूबिन, डेविड कैट्ज	➢ व्यवहार में शारीरिक घटकों और अनुभवों की भूमिका पर ध्यान

Unleash the topper in you

योगदान

- प्रकार्यवाद को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख विद्वान: **थॉर्नडाइक और वुडवर्थ**
- जॉन ड्यूई ने अपने विचार पुस्तक **"Textbook of Psychology"** में प्रस्तुत किए।
- इस संप्रदाय ने शिक्षा मनोविज्ञान में योगदान दिया:
  - ✓ बाल मनोविज्ञान
  - ✓ व्यक्तिगत भिन्नता
  - ✓ बुद्धि परीक्षण

व्यवहारवाद

- व्यवहारवाद की स्थापना **जे. बी. वॉटसन (J. B. Watson)** ने **1913 ई.** में **जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय** में की।
- **प्रमुख व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक:** वॉटसन, स्किनर, वुडवर्थ, टॉलमैन
- व्यवहारवाद **उद्दीपन (Stimulus) और अनुक्रिया (Response)** पर आधारित है, इसलिए इसे **S-R सिद्धांत** भी कहा जाता है।
- यह **वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक अध्ययन** पर बल देता है।
- मनोविज्ञान का विषय केवल **व्यवहार** है, चेतना नहीं।
- यह अंतर्दर्शन (Introspection) विधि का विरोध करता है तथा प्रयोगात्मक विधि को स्वीकार करता है।
- यह संप्रदाय मनोविज्ञान को आत्मा और चेतना से हटाकर **व्यवहार पर केंद्रित करता है**।
- **वॉटसन के विचार**
  - ✓ मनुष्य का व्यवहार पूर्णतः **पर्यावरण द्वारा नियंत्रित** होता है।
  - ✓ नियंत्रित परिस्थितियों में किसी भी बालक को कुछ भी सिखाया जा सकता है।
  - ✓ चेतना और व्यवहार परस्पर विरोधी अवधारणाएँ हैं।
  - ✓ उन्होंने पशु मनोविज्ञान का अध्ययन किया क्योंकि पशु व्यवहार सरल होता है।
  - ✓ **प्रसिद्ध कथन:** "मुझे कोई भी सामान्य बालक दो, मैं उसे जैसा चाहूँ वैसा बना सकता हूँ।"

अन्य योगदानकर्ता

- **टॉलमैन:** सीखने में उद्दीपन-अनुक्रिया पर बल
- **क्लार्क एल. हल:** टॉलमैन के विचारों का समर्थन
- **स्किनर:** पुनर्बलन पर बल
- **पावलॉव:** शास्त्रीय अनुबंधन द्वारा व्यवहार की व्याख्या

- **नव-व्यवहारवाद**
  - ✓ प्रतिनिधि: **कान्टर, स्पेंस आदि (विभिन्न विद्वान)**
  - ✓ यह अधिगम के उन सिद्धांतों का समर्थन करता है जो विभेदीकरण, सामान्यीकरण की क्षमता विकसित करते हैं।
- **गथरी का विचार**
  - ✓ व्यक्ति सरल अनुक्रिया को **एक बार में सीख सकता है**।
  - ✓ जटिल कार्यों के लिए अभ्यास आवश्यक होता है।

गेस्टाल्टवाद / समग्रवाद

- गेस्टाल्टवाद की स्थापना **मैक्स वर्दीमर** ने **1912 ई. में जर्मनी** में की।
- **इसके सह-संस्थापक:** कोहलर, कोफ्का और वर्दीमर
- **"Gestalt" जर्मन भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है:** आकृति, समग्र रूप, पूर्णाकार या संपूर्णता
- **मुख्य विचार**
  - ✓ यह संप्रदाय मानता है कि मनोविज्ञान का अध्ययन **मानसिक क्रियाओं एवं अनुभवों के संगठन** पर आधारित है।
  - ✓ मानव मस्तिष्क किसी भी वस्तु या समस्या को **समग्र रूप में देखता है,** न कि अलग-अलग भागों में।
  - ✓ यह संप्रदाय **"अंश से पूर्ण की ओर"** के बजाय **"पूर्ण से अंश की ओर"** अध्ययन पर बल देता है।
  - ✓ गेस्टाल्टवाद का विरोध **विलियम वुंट के संरचनावाद** से था, जो चेतना को छोटे-छोटे तत्वों में विभाजित करता था।
  - ✓ गेस्टाल्टवाद **अवयवों की पूर्णता** पर बल देता है।
- **कोहलर का योगदान**
  - ✓ कोहलर ने चिंपैंज़ी पर प्रयोग कर यह सिद्ध किया कि सीखना केवल **प्रयत्न एवं भूल** से नहीं होता, बल्कि **सूझ** से भी होता है।

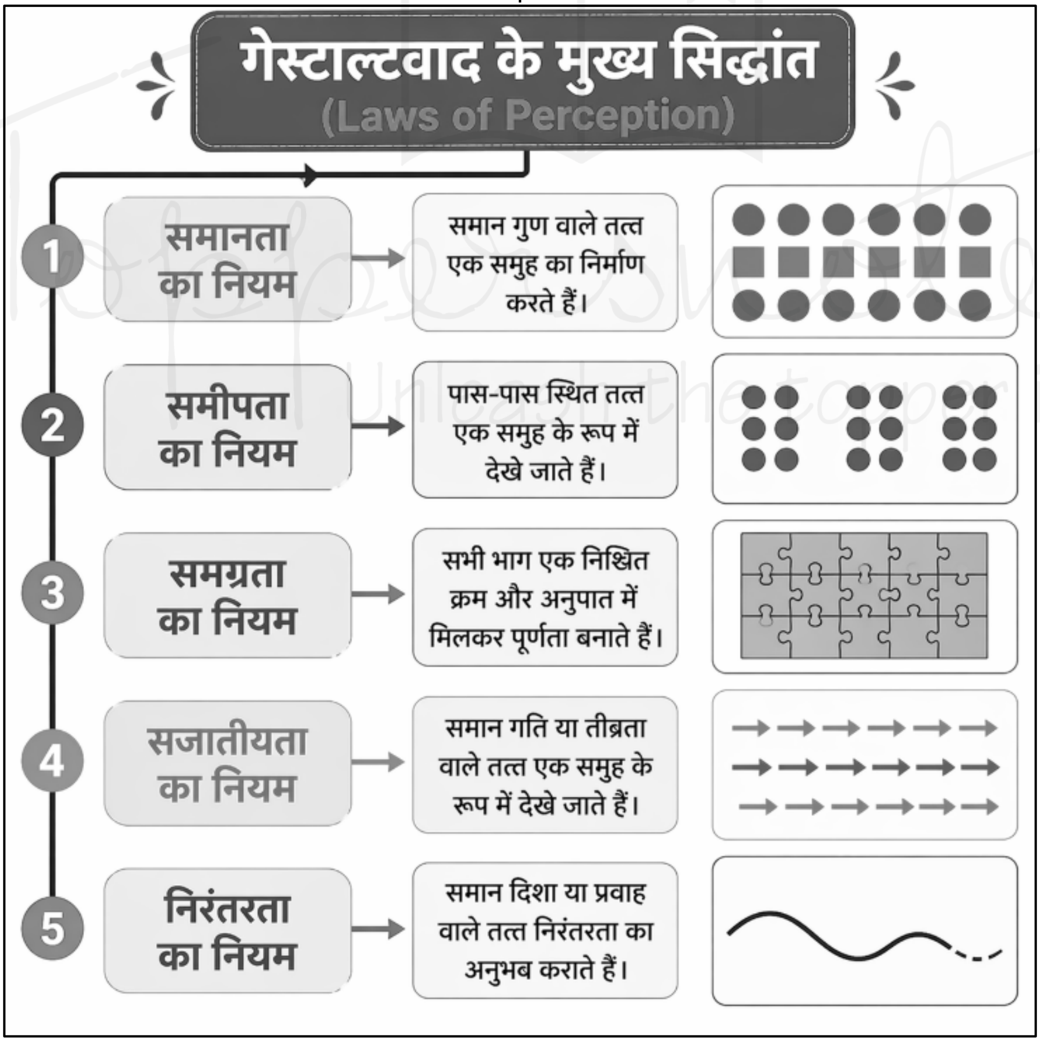

- **शिक्षा में योगदान**
  - ✓ गेस्टाल्टवाद शिक्षा को केवल ज्ञान तक सीमित नहीं मानता, बल्कि **समग्र विकास** पर बल देता है।
  - ✓ यह सिद्धांत छात्रों में: विश्लेषण, संश्लेषण, सामान्यीकरण को विकसित करता है।
  - ✓ यह छात्रों को **नियम एवं सिद्धांतों को समझने में सहायता करता है**।

<u>मनोविश्लेषणवाद</u>

- मनोविश्लेषणवाद की स्थापना **सिग्मंड फ्रायड** ने **1900 ई. में वियना** में की।
- **प्रमुख** समर्थक: **कार्ल युंग, अल्फ्रेड एडलर**
- फ्रायड ने मानसिक रोगों के उपचार हेतु **मनोविश्लेषणात्मक विधियों** का विकास किया।
- यह संप्रदाय मूल रूप से **चिकित्सा विज्ञान** से जुड़ा है।
- मानव व्यवहार का मुख्य आधार **मूल प्रवृत्तियाँ** हैं।
- **मूल प्रवृत्तियों की विशेषताएँ:** मूल प्रवृत्तियों के चार तत्व होते हैं:
  1. उद्देश्य (Aim)
  2. दबाव (Pressure)
  3. आधार (Source)
  4. वस्तु (Object)

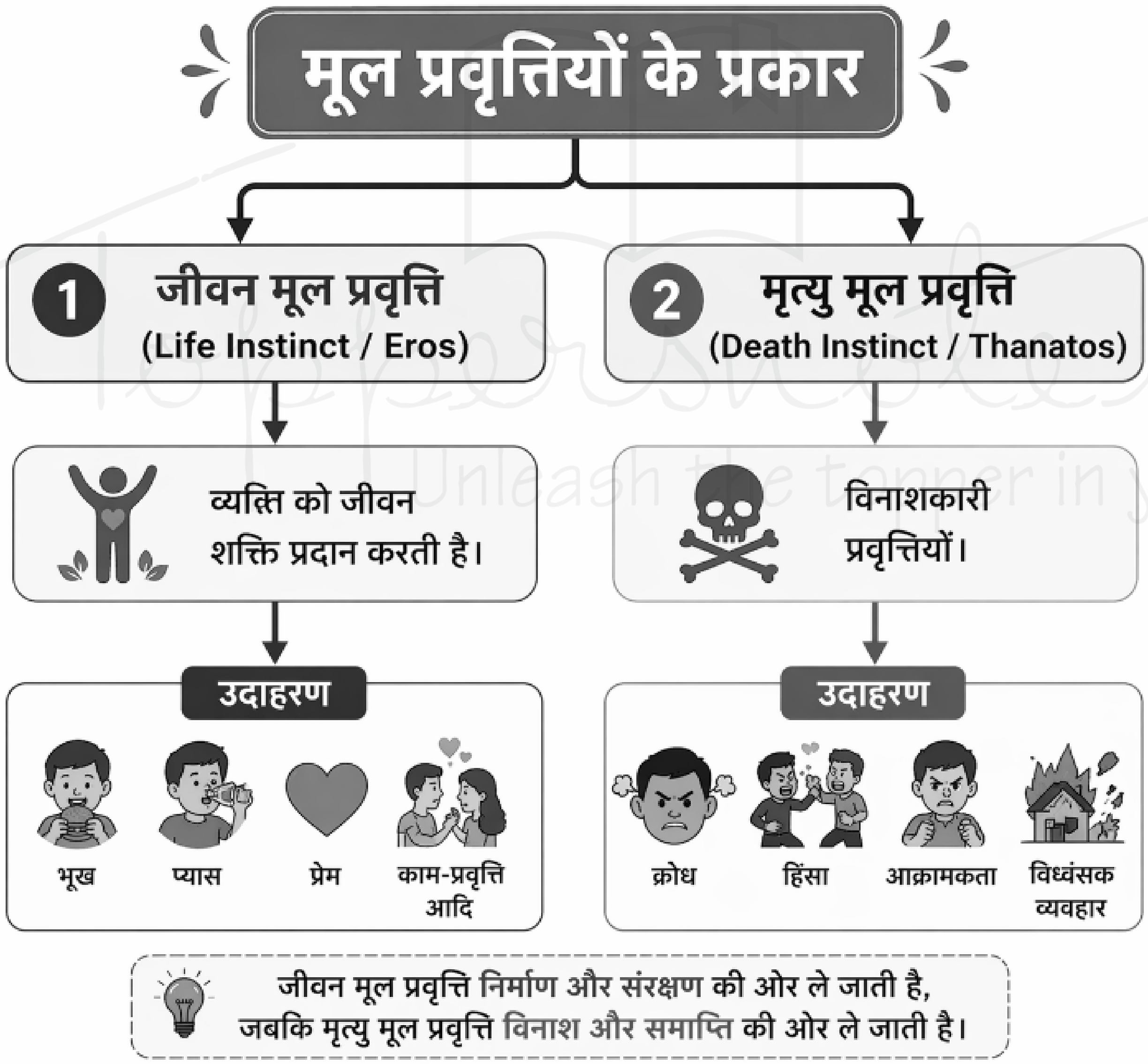

➢ **फ्रायड के अनुसार मन के भाग**

मन	विवरण
चेतन मन	➢ व्यक्ति की जागृत अवस्था। ➢ सोचने और स्मरण करने की तत्काल क्षमता। ➢ मानसिक जीवन का लगभग **1/10 भाग**।
अर्द्धचेतन मन	➢ चेतन और अचेतन के बीच की अवस्था। ➢ आवश्यकता पड़ने पर जानकारी उपलब्ध कराता है।
अचेतन मन	➢ मन का सबसे बड़ा भाग **(लगभग 9/10)** ➢ दमित इच्छाएँ और अनुभव इसमें संग्रहीत रहते हैं। ➢ व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से इसकी जानकारी नहीं होती।

➢ फ्रायड के अनुसार **अचेतन मन सबसे महत्वपूर्ण है**, क्योंकि यह मानव व्यवहार को सबसे अधिक प्रभावित करता है।

सहचार्यवाद

➢ सहचार्यवाद की स्थापना **जॉन लॉक** द्वारा की गई।

➢ **प्रमुख सहयोगी**: बर्कले

➢ जब मस्तिष्क में विभिन्न **उत्तेजनाएँ** पहुँचती हैं, तो उनके स्पंदन आपस में जुड़कर एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

➢ ज्ञान का निर्माण **अनुभवों और विचारों के संबंध** से होता है।

प्रयोजनवाद संप्रदाय

➢ **अन्य नाम:** प्रेरक संप्रदाय, करणीयतावादी संप्रदाय, हार्मिक संप्रदाय

➢ **प्रवर्तक:** विलियम मैकडूगल

➢ मैकडूगल ने इस सिद्धांत का वर्णन अपनी पुस्तक **“Introduction to Social Psychology (1912)”** में किया ।

➢ **मुख्य विचार**

✓ प्रत्येक व्यवहार के पीछे **कोई न कोई उद्देश्य** होता है।

✓ व्यक्ति हमेशा **लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यवहार करता है**।

✓ व्यवहार के लिए **क्रिया** आवश्यक होती है।

➢ **मैकडूगल द्वारा क्रिया के चार लक्षण**

क्रिया	विवरण
लक्ष्य-निर्देशित क्रिया	➢ क्रिया किसी उद्दीपक से प्रारंभ होती है और लक्ष्य की प्राप्ति तक चलती रहती है। ➢ लक्ष्य प्राप्ति के बाद भी क्रिया कुछ समय तक जारी रह सकती है।
लक्ष्य स्थिरता	➢ क्रिया बदल सकती है, लेकिन लक्ष्य वही रहता है।
लक्ष्य प्राप्ति पर समाप्ति	➢ लक्ष्य प्राप्त होते ही क्रिया समाप्त हो जाती है।
अभ्यास का प्रभाव	➢ बार-बार अभ्यास से क्रिया में सुधार होता है और लक्ष्य प्राप्ति आसान हो जाती है।

निर्मितवाद / रचनावाद संप्रदाय

- निर्मितवाद एक आधुनिक शिक्षण सिद्धांत है जिसमें विद्यार्थी सक्रिय रूप से ज्ञान का निर्माण करता है और शिक्षक एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।
- **संस्थापक:** जेरोम ब्रूनर
- **मुख्य अवधारणा**
  - ✓ निर्मितवाद एक आधुनिक शिक्षण उपागम है जिसमें छात्र अपने **पूर्व अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करते हैं**।
  - ✓ यह संरचनावाद का एक आधुनिक रूप माना जाता है।
  - ✓ बालक अपनी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अनुभव प्राप्त करता है, उनका अर्थ निकालता है और फिर उन्हें व्यवस्थित करता है।
- **विकास**
  - ✓ इसका विकास **प्रगतिशील शिक्षा आंदोलन** के प्रभाव से हुआ।
  - ✓ **प्रमुख समर्थक:** जीन पियाजे और जॉन ड्यूई

जॉन ड्यूई के विचार

- व्यक्ति **सामाजिक प्रक्रिया में भाग लेकर सीखता है**।
- सीखना समस्या समाधान पर आधारित होता है।

किलपैट्रिक का योगदान

- जॉन ड्यूई के शिष्य **किलपैट्रिक** ने **सामूहिक गतिविधियों** पर बल दिया।
- उन्होंने **प्रोजेक्ट विधि** का विकास किया।

- **शैक्षिक महत्व**
  - ✓ आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में निर्मितवाद को **NCF 2005 (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा)** में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

➢ **निर्मितवाद की विशेषताएँ**

1. छात्र अपने अनुभवों से स्वयं सीखता है।
2. यह "गलतियाँ करके सीखने" पर बल देता है।
3. यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रक्रिया है।
4. ज्ञान के पुनर्गठन और क्रमबद्धता पर बल देता है।
5. क्रिया और चिंतन साथ-साथ चलते हैं।

मानवतावादी संप्रदाय

➢ **प्रतिपादक** – अब्राहम मैस्लो तथा कार्ल रोजर्स ।

➢ यह संप्रदाय मनोविश्लेषण सिद्धांत और व्यवहारवाद के विरोध में विकसित हुआ।

➢ मैस्लो ने व्यवहारवादियों द्वारा मानव व्यवहार के अध्ययन हेतु पशुओं पर किए गए प्रयोगों की आलोचना की और बताया कि मानव व्यवहार पशु व्यवहार से अधिक जटिल और भिन्न होता है।

➢ मैस्लो ने **अभिप्रेरणा के पदानुक्रम** सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसमें बताया गया कि अभिप्रेरणा समग्र रूप से मानव व्यवहार को प्रभावित करती है।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान

➢ **प्रतिपादक** – कार्ल गुस्ताव युंग ।

➢ युंग ने व्यक्तित्व को **अंतर्मुखी** और **बहिर्मुखी** प्रवृत्तियों में विभाजित किया।

➢ युंग के अनुसार **अहम (Ego)** चेतन मन का केंद्र होता है।

समाजशास्त्रीय संप्रदाय

➢ **प्रमुख विचारक** – कैरन हॉर्नी, हैरी स्टैक सुलिवन, एरिक फ्रॉम।

➢ इस संप्रदाय के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक संबंधों, संस्कृति और सामाजिक वातावरण से प्रभावित होता है।

वैयक्तिक संप्रदाय

➢ **स्थापना** – अल्फ्रेड एडलर

➢ एडलर ने मनोविश्लेषणवादियों के विचारों का विरोध करते हुए इस संप्रदाय का विकास किया।

➢ उन्होंने अपनी पुस्तक **"The Neurotic Constitution"** में इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

➢ एडलर के अनुसार व्यक्ति में **सामाजिक रुचि** जन्मजात होती है, इसलिए मनुष्य को एक **सामाजिक प्राणी** माना जाता है।

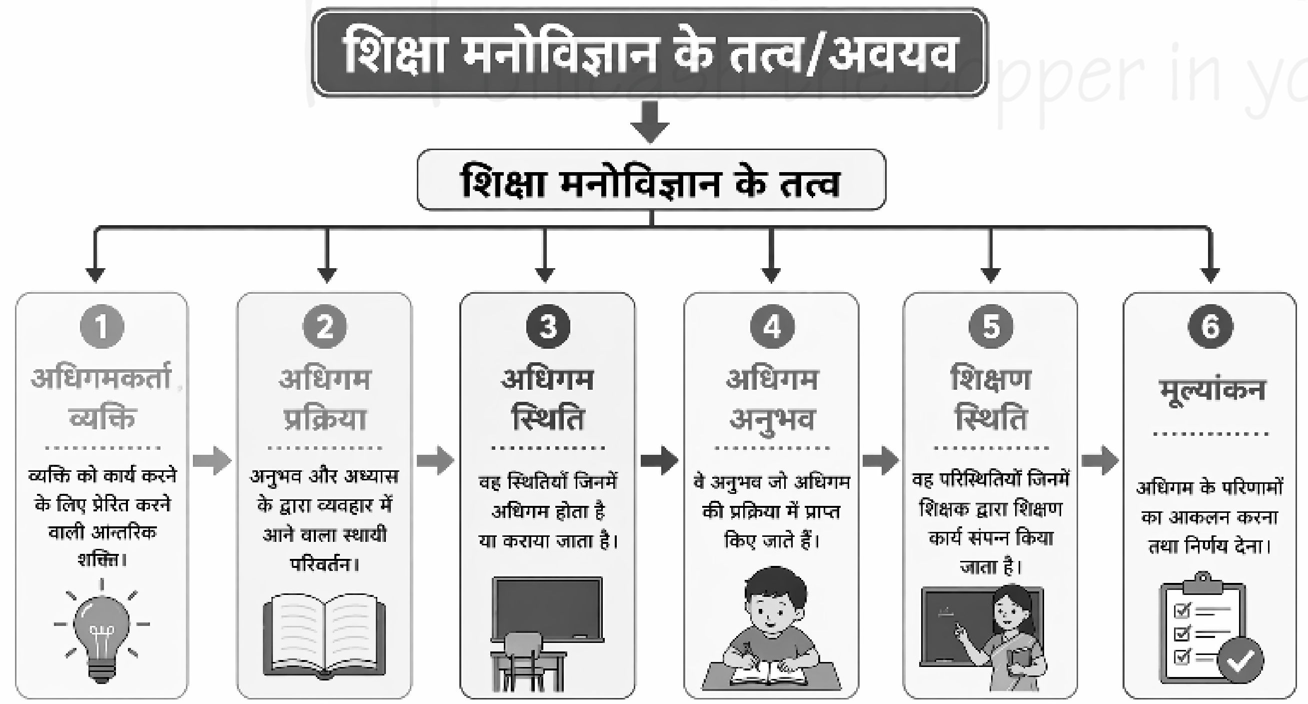

शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ

- शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए प्रयुक्त विधियों को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जाता है -
    1. **आत्मनिष्ठ विधियाँ**
    2. **वस्तुनिष्ठ विधियाँ**

आत्मनिरीक्षण विधि / अन्तःदर्शन प्रणाली

- अपने मन के भीतर झाँकना या स्वयं का अवलोकन करना ही आत्मनिरीक्षण कहलाता है।
- **विचारक एवं योगदान**
    - ✓ इस विधि का संबंध दार्शनिक **जॉन लॉक** से माना जाता है।
    - ✓ वास्तविक रूप से इसका विकास **विलियम वुण्ट** और **टिचनर** ने किया।
    - ✓ **जॉन लॉक के अनुसार,** "मन अपनी स्वयं की क्रियाओं का निरीक्षण करता है।"
    - ✓ **टिचनर के अनुसार,** "अपने आप का अवलोकन ही आत्मनिरीक्षण है।"
- **विशेषताएँ**
    - ✓ यह मनोविज्ञान की एक **प्राचीन विधि** है।
    - ✓ इसमें **प्रयोगकर्ता और प्रयोज्य एक ही व्यक्ति होता है**।
    - ✓ यह एक **आत्मपरक** विधि है।
    - ✓ इसमें किसी यंत्र या प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं होती।
- **सीमाएँ / दोष**
    - ✓ यह एक **अवैज्ञानिक विधि** मानी जाती है।
    - ✓ मस्तिष्क की वास्तविक अवस्था का पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता।
    - ✓ यह विधि **विश्वसनीय और वैध** नहीं है।
    - ✓ यह बच्चों, पशुओं और असामान्य व्यक्तियों पर लागू नहीं होती।

वस्तुनिष्ठ विधियाँ

- शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए प्रयुक्त विधियों को वस्तुनिष्ठ विधियाँ कहा जाता है।

1. बहिःदर्शन

- ✓ **प्रतिपादक** – जॉन बी वाटसन
- ✓ **अन्य नाम** – अवलोकन विधि, निरीक्षण विधि, परीक्षण विधि
- ✓ किसी अन्य व्यक्ति या प्राणी के व्यवहार का अवलोकन करके उसके व्यवहार को समझना **बहिःदर्शन** कहलाता है।
- ✓ इस विधि में अध्ययनकर्ता प्राणी या व्यक्ति के व्यवहारों का निष्पक्ष रूप से अवलोकन करता है और उसके आधार पर एक रिपोर्ट तैयार करता है।
- ✓ इस रिपोर्ट के विश्लेषण के पश्चात वह उस प्राणी या व्यक्ति के व्यवहार के संबंध में निष्कर्ष निकालता है।
- ✓ प्रेक्षण को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए व्यवहारों का अवलोकन विभिन्न परिस्थितियों में किया जाता है।
- ✓ कई प्रेक्षक मिलकर एक ही समय पर अवलोकन करते हैं, जिससे यह विधि अधिक विश्वसनीय बनती है। इसी कारण इसे **वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण विधि** भी कहा जाता है।

ToppersNotes unleash the topper in you

बहि दर्शन के गुण व दोष	
गुण	**दोष**
1. यह एक निष्पक्ष पद्धति है, अतः इसके परिणाम अधिक वैध होते हैं। 2. इस विधि से प्राप्त परिणाम व्यापक एवं विश्वसनीय होते हैं। 3. यह विधि मितव्ययी (कम खर्चीली) तथा लचीली होती है।	1. इस विधि द्वारा अचेतन मन का अध्ययन नहीं किया जा सकता। 2. दूसरे की मानसिक स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त परीक्षण की आवश्यकता होती है। 3. अवलोकनकर्ता के पूर्वाग्रह कई बार परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। 4. कभी-कभी अवलोकनकर्ता अपने विचार, भाव एवं अनुभूतियाँ दूसरों पर आरोपित कर देता है।

✓ **व्यवहार के प्रकार**

- अध्ययनकर्ता प्राणी के दो प्रकार के व्यवहारों का प्रेक्षण करता है –

1. **आन्तरिक व्यवहार** - जैसे हृदय की धड़कन, रक्तचाप में परिवर्तन आदि।
2. **बाह्य व्यवहार** – जैसे खेलना, दौड़ना, रोना, हँसना आदि।

✓ **प्रेक्षण के प्रकार:** प्रेक्षण या निरीक्षण के मुख्यतः तीन प्रकार होते हैं -

1. सहभागी प्रेक्षण
2. असहभागी प्रेक्षण
3. स्वाभाविक प्रेक्षण (विशेष रूप से पशुओं के अध्ययन में उपयोगी)

महत्वपूर्ण कथन

✓ **गेरेट के अनुसार**, यह विधि बाल-अध्ययन के लिए अत्यंत उपयोगी है।

✓ क्रो एवं क्रो के अनुसार "सतर्कता से नियंत्रित परिस्थितियों में, भली-भाँति प्रशिक्षित और अनुभवी मनोवैज्ञानिक या शिक्षक अपने निरीक्षण द्वारा छात्र के व्यवहार के बारे में बहुत कुछ जान सकता है।"

2. प्रयोगात्मक विधि

✓ **प्रतिपादक** – विलियम वुन्ट

✓ प्रयोगात्मक विधि में नियंत्रित वातावरण में व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं एवं व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

✓ इस विधि में व्यवहार का अध्ययन पूर्व-निर्धारित परिस्थितियों में किया जाता है, जहाँ सभी आवश्यक तत्वों (चरों) पर नियंत्रण रखा जाता है।

✓ इसी विधि ने मनोविज्ञान को **विज्ञान का दर्जा** प्रदान किया है।

✓ यह विधि मूलतः **जॉन स्टुअर्ट मिल** द्वारा प्रतिपादित **चर के नियम** पर आधारित है।

चर

✓ चर वह तत्व, परिस्थिति या गुण होता है जिसे मापा जा सकता है, अर्थात् जो परिमाणात्मक रूप से बदलता है।

✓ **उदाहरण** – आयु, वृद्धि, थकान आदि

✓ **मनोवैज्ञानिक प्रयोग में चरों के प्रकार**

1. **स्वतंत्र चर**
2. **आश्रित चर**
3. **संगत/नियंत्रित चर**

प्रयोगात्मक विधि के सोपान

1 समस्या से संबंधित पूर्व साहित्य की समीक्षा

समस्या से संबंधित उपलब्ध पुस्तकों, शोध पत्रों, लेखों एवं अन्य स्रोतों का अध्ययन्न करना।

2 समस्या का चयन एवं स्पष्ट परिभाषा

शोध के लिए उपयुक्त समस्या का चयन करना तथा उसे स्पष्ट और सीमाबद्ध रूप में परिभाषित करना।

3 नमूना (Sample) चयन एवं तथ्यों का संकलन

उपयुक्त नमूना (छात्रों/प्रतिभागियों) का चयन करना तथा विभिन्न साधनों द्वारा आवश्यक तथ्यों/डेटा का संकलन करना।

4 तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण

संकलित तथ्यों को क्रमबद्ध करना, तालिकाओं/चार्ट/ग्राफ आदि की सहायता से उनका विश्लेषण करना और अर्थ निकालना।

5 परिकल्पना (Hypothesis) का परीक्षण

विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना की सत्यता की जाँच करना और उसे स्वीकार या अस्वीकार करना।

★ उद्देश्य ★

वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से सत्य, विश्वसनीय एवं वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष तक पहुँचना।

ToppersNotes Unleash the topper in you